15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - सबको यही पैगाम दो कि देह सहित देह के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझो तो सब दु:ख दूर हो जायेंगे"

प्रश्नः तुम बच्चों को किस बात में फालो फादर करना है?

उत्तर: जैसे इस ब्रह्मा ने अपना सब कुछ ईश्वर अर्पण कर दिया। पूरा ट्रस्टी बना, ऐसे ट्रस्टी बनकर रहो। कभी भी उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पाप आत्माओं को नहीं देना। अपना सब कुछ ईश्वरीय सेवा में लगाओ, पूरा ट्रस्टी बनो। बाप की श्रीमत पर चलते रहो। बाप देखते हैं कौन बच्चा कितना श्रीमत पर चलता है।

Why it is so...? | very Subtle Point to understand | कर्मों की गुह्य गति | Attention..! | God is Watching you

गीत: तू प्यार का सागर है.... Click

'तू प्यार का सागर है
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने
लौटा जो दिया तूने
चले जायेंगे जहाँ से हम
चले जायेंगे जहाँ से हम
तू प्यार का सागर है
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने
लौटा जो दिया तूने
चले जायेंगे जहाँ से हम
चले जायेंगे जहाँ से हम

Po

घायल मन का, पागल पंछी उड़ने को
उड़ने को बेकरार
पंख हैं कोमल, आँख है धुंधली, जाना
है सागर पार
जाना है सागर पार
अब तू ही इसे समझा
अब तू ही इसे समझा, राह भूले थे
कहाँ से हम
राह भूले थे कहाँ से हम
तू प्यार का सागर है
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तू प्यार का सागर है

इधर झूम के गाए ज़िंदगी,
उधर है मौत खड़ी
उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा,
उलझन आन पड़ी
उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे
कानों में ज़रा कह दे, कि
आए कौन दिशा से हम
कि आए कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तेरी एक बूँद के प्यासे हम
तू प्यार का सागर है
तू प्यार का सागर है'

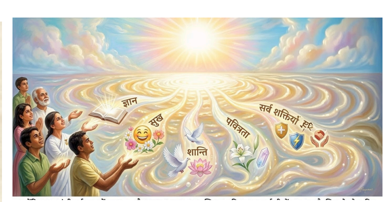

1

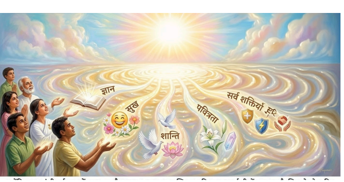
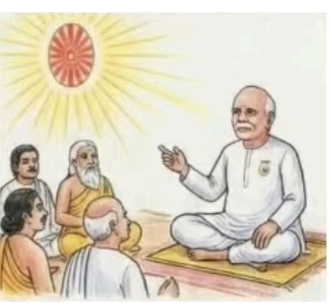

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। कहते हैं बाबा हम कहाँ से आये, कब आये फिर वापिस जाने की राह कैसे भूले। यह ड्रामा कानों में समझा दीजिए। हम कौन हैं, कहाँ से आये फिर कहाँ चले गये! एक ज्ञान की बूँद तो दे दो क्योंकि ज्ञान सागर है ना। अभी बच्चे जानते हैं हम आत्मायें कहाँ की रहने वाली हैं फिर बाप को और अपने स्वर्ग को कैसे भूले और कैसे आकर यहाँ दु:खी हुए - यह राज़ कानों में सुनाओ। अब बाप ज्ञान का सागर भी है, पवित्रता का सागर भी है। प्रेम का सागर भी है। शान्ति का, सुख और सम्पत्ति का सागर भी है। अभी बेहद के बाप द्वारा यह सब बातें समझते हैं। आदि में कहाँ से आये फिर मध्य में क्या हुआ, जो हम रास्ता भूल दु:खी हुए। फिर अब बाप को कहते हैं बाबा हमको रास्ता बताओ। हम अपने सुखधाम शान्तिधाम में जायें। बाप ही बैठ बतलाते हैं - तुम आदि में कौन थे फिर मध्य में क्या हुआ। भक्ति मार्ग कैसे शुरू हुआ, अन्त में क्या हुआ, यह आदि-मध्य-अन्त का राज़ अब बुद्धि में बैठा है। यह ड्रामा है ना। यह मनुष्यों को जरूर जानना है -

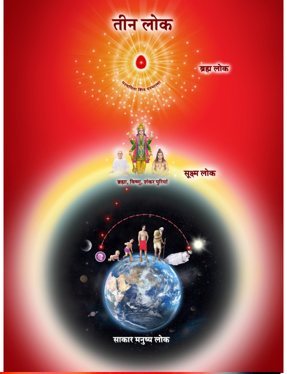

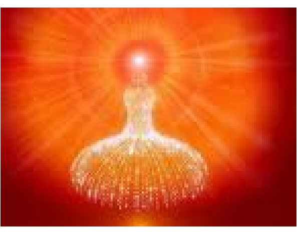

क्योंकि एक्टर्स हैं। जानते हैं हम आत्मायें निराकारी शान्तिधाम से आती हैं, यहाँ टॉकी धाम में। मूलवतन, सूक्ष्मवतन फिर यह है स्थूलवतन। फिर मूलवतन से आत्मायें आती हैं टॉकीधाम में, शरीर धारण कर पार्ट बजाने। आत्मा का निवास स्थान शान्तिधाम है। यह बातें दुनिया में कोई भी नहीं जानते हैं। यह ज्ञान सागर बाप ने ही आकर समझाया है। अभी समझा रहे हैं - ज्ञान सागर कहा जाता है पारलौकिक परमपिता परमात्मा को। मनुष्य को नहीं कह सकते। यह महिमा सिर्फ एक बाप की गाई जाती है, जिसको और कोई नहीं जानते। अभी विनाश का समय है। गाया हुआ है विनाश काले विप्रीत बुद्धि यूरोपवासी...

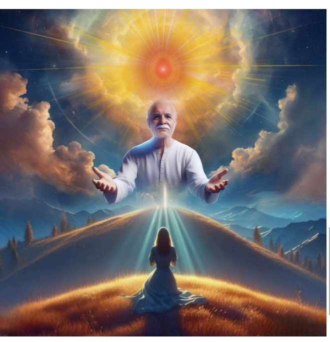

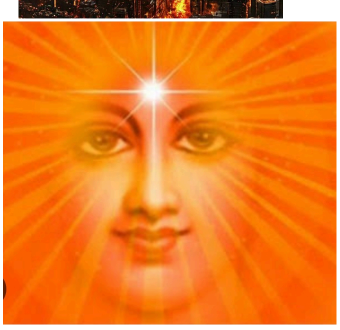

अभी बाप ने तुम्हारा बुद्धियोग अपने साथ लगाया है कि मामेकम् याद करो। मैं मुसलमान हूँ, हिन्दू हूँ, बौद्धी हूँ... यह सब देह के धर्म हैं। आत्मा तो आत्मा ही है। बाप समझाते हैं - देह के सब धर्म

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

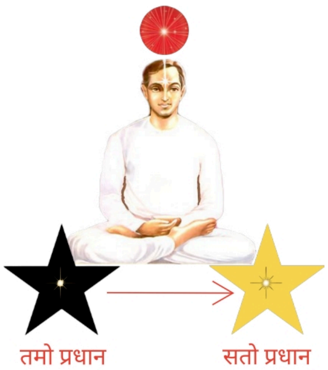

छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करेंगे तो पतित से पावन बन जायेंगे। बाप कहते हैं - इस देह को भी भूलो। यह सबके लिए बाप का पैगाम है। देह सहित देह के जो सम्बन्ध हैं, सबको भूलो। मैं आत्मा हूँ, हम सब ब्रदर्स का बाप एक है। यह ब्रह्मा भी कहेंगे हम आत्मा हैं तो सब भाई-भाई हो गये। इस समय सब भाई-भाई पतित दु:खी हैं। सब काम चिता पर चढ़ भस्म हो पड़े हैं। जब द्वापर के आदि में रावण राज्य शुरू होता है तो फिर तुम वाम मार्ग में जाते हो। तब ही फिर और धर्म शुरू होते हैं। आधा समय तुम पवित्र रहते हो। फिर आधा में तुम पतित बनते हो। 21 जन्म भारत में ही गाये जाते हैं। कुमारी वह जो 21 कुल का उद्धार करे। कुमारी का मान है। तुम भारत का तो क्या सारी दुनिया का उद्धार कर रहे हो। तुम जानते हो हम सब आत्मायें शिवबाबा के बच्चे हैं। तो कुमार ही ठहरे। भाई-बहन तब होते हैं जब प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद बनते हैं। यह तुम बच्चों को ज्ञान है। हम आत्मायें सब भाई-भाई हैं, सब बाप को पुकारते हैं - हे पतित-पावन आओ।

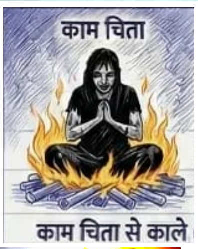

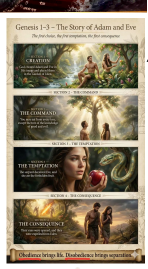

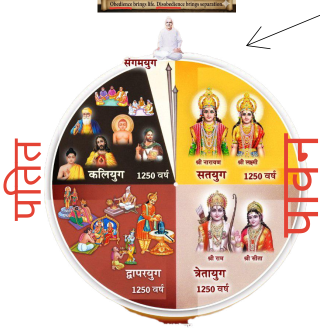

Point to be Noted

यहाँ रावणराज्य से, दु:ख से हमको लिबरेट करो। फिर हमारा गाइड बन हमको वापस ले चलो। हमारे दु:ख हरो और सुख दो। अभी तुम समझते हो बरोबर बाबा आया हुआ है। हमको इस कलियुगी रावणराज्य से छुड़ाए साथ ले चलेंगे।

बाप जानते हैं सभी आत्मायें पतित हैं, इसलिए शरीर भी पतित है। आत्मा को ही पावन बनाकर ले जाते हैं निर्वाणधाम में। पास्ट से प्रेजेन्ट फिर फ्युचर होगा। आदि-मध्य-अन्त फिर आदि। सतयुग आदि कलियुग अन्त फिर फ्युचर होगा सतयुग।

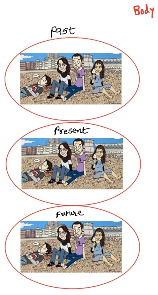

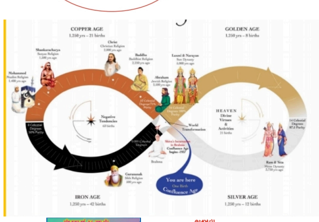

यह तो सहज है ना। अच्छा बीच में क्या हुआ? हम कैसे गिरे? हम पावन देवता थे फिर पावन से पतित कैसे बने! अभी तुम समझते हो, बाप समझाते हैं - जब रावणराज्य शुरू होता है तब तुम पतित बनते हो। अब फिर तुमको भविष्य देवता बनाने आया हूँ। इसमें डिफीकल्टी की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं - तुमको इस विषय सागर से पार ले जाते हैं। गाते भी हैं नईया मेरी... सभी पुकारते हैं एक बाप को। हमारी नईया जो डूबी हुई है, उनको क्षीरसागर में ले चलो। उनको खिवैया,

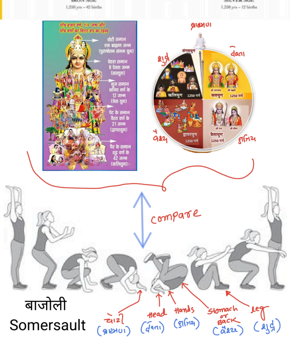

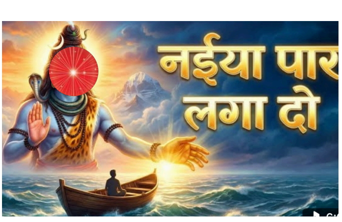

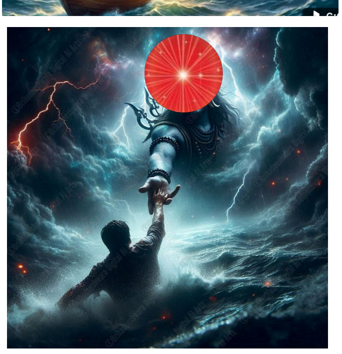

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

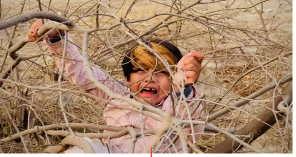

बागवान भी कहते हैं। अभी कांटों के जंगल में पड़े हैं। हमको फिर फूलों के बगीचे में ले चलो। देवतायें फूल हैं ना। अभी सब हैं कांटे। एक दो को दु:ख ही देते रहते हैं। देवता कभी किसको दु:ख नहीं देते।

वहाँ तो सुख ही सुख है। वह तो सिर्फ गाते हैं तुम यहाँ प्रैक्टिकल सुन रहे हो। कहते हैं ना - बाबा हम कहाँ से भूले! इस सृष्टि चक्र को हम कैसे भूले!

सतयुग-त्रेता में यह नहीं जानते क्योंकि वहाँ तो हम सुखी थे फिर दु:खी कब हुए? जब रावणराज्य शुरू हुआ।

भारतवासी रावण को जलाते ही रहते हैं। जब तक उनका विनाश नहीं हुआ है। फिर सतयुग में थोड़ेही हर वर्ष जलायेंगे। यह है भक्ति मार्ग। अभी रावण का राज्य खलास होना है।

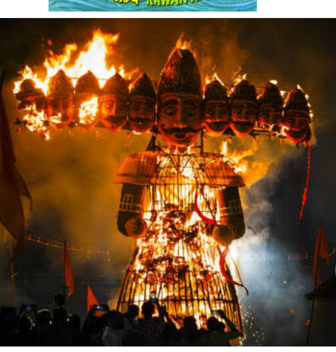

भक्तिमार्ग में रावण को हर वर्ष जलाते हैं परन्तु मरता ही नहीं है। अभी रावण तुम्हारे आगे जैसे मर गया। तुम जानते हो रावणराज्य अब खत्म होना है। 5 भूतों का सिर काटा जाता है। पहले-पहले काम के सिर को काटते हो। काम ही महाशत्रु है।

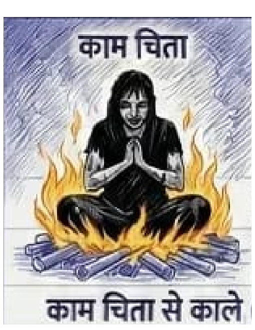

बाप कहते हैं - इन 5 भूतों पर विजय पाने से ही तुम विश्व पर जीत पायेंगे। मनुष्य खुद भी कहते हैं

oints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

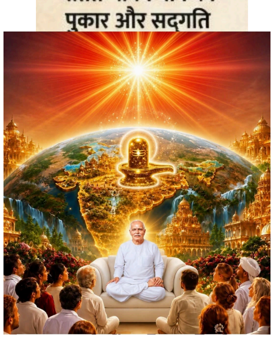

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हम पतित हैं इसलिए बुलाते हैं - पतितों को पावन बनाने आओ। आत्मा बुलाती है हे पतित-पावन, हे बाबा... खिवैया, रहमदिल बाबा आओ। बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प आता हूँ। कैसे आता हूँ, यह कोई नहीं जानते। गीता में भी है - भगवान ने आकर राजयोग सिखाया है। परन्तु भगवान कौन है, कब आया यह किसको पता नहीं है। गीता को तो खण्डन कर दिया है। श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। द्वापर के बाद तो दुनिया और ही पतित होती है। तो द्वापर में श्रीकृष्ण ने आकर क्या किया। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं। बिल्कुल ही अनराइटियस हैं। सतयुग में होते हैं राइटियस। तुम अभी अनराइटियस से राइटियस बनते हो। बाप समझाते हैं तुम ही सम्पूर्ण निर्विकारी पूज्य थे, तुम ही अब विकारी पुजारी बने हो। आपेही पूज्य... पहले तुम पूज्य थे, 21 जन्म तक, फिर पुजारी बने हो। सतयुग में 8 जन्म फिर त्रेता में 12 जन्म लेते हो। बाप ही बतलाते हैं - तुम पतित कैसे बने हो, कब से गिरे हो, यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि-मध्य-अन्त का

पर ये तुमको पता है...

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है,
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"
- निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे...
कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना,
जब की स्वयं भगवान(पारस मणी) हमें मिल गए हैं और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू देकर चल रहे हैं...?

पूजारी

पूज्य

Exclusive Authority of Shiv baba

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

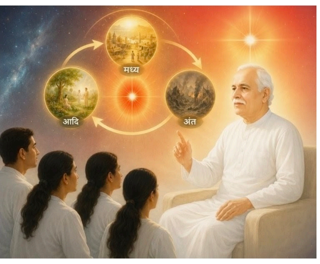

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

राज़ बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। सब एकरस तो नहीं समझेंगे। नम्बरवार ही समझते हैं।

बाप कहते हैं - मैं आकर किंगडम स्थापन करता हूँ। अब तुमको सर्वगुण सम्पन्न बनना है, तब तक सतयुग में जा नहीं सकते। बनना यहाँ है फिर भविष्य में जाकर तुम राज्य करेंगे। उसके बीच में सब विनाश हो जायेगा। विनाश भी देखेंगे जरूर। तुम प्रैक्टिकल में अपना पार्ट बजायेंगे। तुमको थोड़ेही पता पड़ता है - आगे क्या होगा। जो कल्प पहले हुआ होगा वही होगा।

ये पक्का समझ लो..

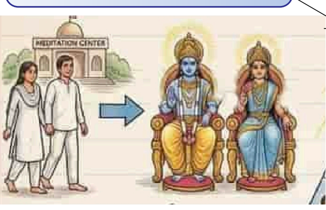

Coming soon...

Are you ready?

तुमको टोटल बताया जाता है - स्थापना और विनाश होना है। विनाश कैसे होगा? वह तो जब होगा तब देखेंगे। दिव्य दृष्टि से विनाश तो देखा है। आगे चल प्रैक्टिकल भी देखेंगे। स्थापना का भी साक्षात्कार दिव्य दृष्टि से किया है और प्रैक्टिकल

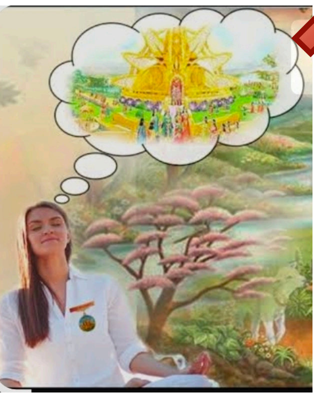

भी देखेंगे। बाकी जास्ती ध्यान में जाना भी ठीक नहीं है। फिर वैकुण्ठ में जाकर डांस करने लग पड़ते हैं। न ज्ञान, न योग, दोनों से वंचित हो जाते हैं। ध्यान में जाने की कोई दरकार नहीं। यह तो भोग सिर्फ लगाया जाता है। तुम ब्राह्मण वहाँ जाते हो। देवताओं और ब्राह्मणों की महफिल लगती है।

समझा?

यहाँ तुम पियरघर में बैठे हो फिर तुमको लायक बनाया जाता है, विष्णुपुरी जाने के लिए। कन्या की जब सगाई करते हैं तो उनको समझाया जाता है - ससुरघर में कैसे चलना, सबसे प्यार से चलना, झगड़ा नहीं करना। यह भी हूबहू ऐसे है। बाप कहते हैं - तुमको सर्वगुण सम्पन्न... यहाँ बनना है। स्वर्ग में यह लड़ाई-झगड़े आदि होते नहीं। अभी तुम विष्णुपुरी ससुरघर जाते हो। वहाँ हैं महान वैष्णव। उन जैसे वैष्णव सृष्टि पर होते नहीं। वैष्णव देवतायें विकार में थोड़ेही जाते हैं। विकार है हिंसा। कहा जाता है अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म। अभी तुम जानते हो हम पियरघर में बैठे हैं, अभी हमको विष्णुपुरी में जाना है। जानते हो वहाँ बहुत सुख होता है। शादी के पहले कन्या फटा

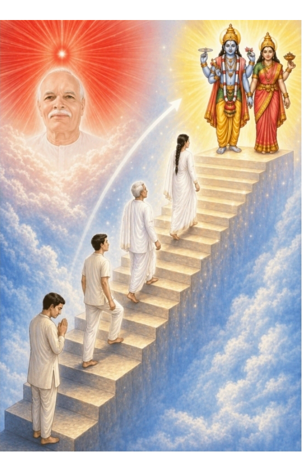

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

हुआ कपड़ा पहनती है, जिसको वनवाह कहते हैं। तुम्हारे पास भी अभी क्या है? कुछ भी नहीं। यह तो ठिक्कर-भित्तर है। यहाँ तुमको कोई भी जेवर आदि पहनने की दरकार नहीं। परन्तु कहते हैं गृहस्थ में रहना है, शादी आदि में जाना पड़ता है तो जेवर आदि भी भल पहनो। मना नहीं है। नहीं तो कहेंगे विधवा, जेवर नहीं पहनती है। नाम बदनाम होगा तब बाबा कहते हैं नाम बदनाम नहीं करना है। कुछ भी पहनो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। जाओ भल कहाँ भी, यह मन्त्र याद रखो। यह परीक्षा लो हम याद में रहते हैं। यहाँ हम जाते हैं - बाबा के डायरेक्शन से। उनके साथ भी तोड़ निभाना है। परन्तु हथ कार डे दिल यार डे...तो समझेंगे यह मजबूत हैं। जेवर आदि पहन शादी पर भल जाओ, इकट्ठे रहो लेकिन महावीर बनना है। संन्यासियों का भी दिखाते हैं ना - गुरू ने वेश्या पास भेज दिया, सर्प के पास भेज दिया। जो बहादुरी से पास हो दिखाते हैं उनको महावीर कहा जाता है। बाप की याद में रहेंगे तो फिर कोई कर्मेन्द्रियों से चंचलता नहीं होगी। बाप को भूले तो

Definition of

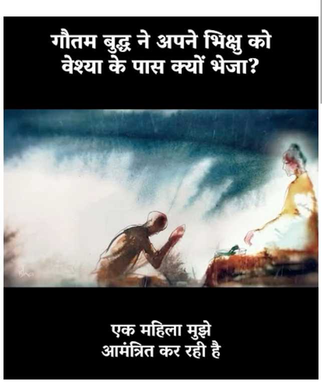

m.m.m....imp.

कर्मेन्द्रियां चंचल होगी। विश्व के तुम मालिक बनते हो, यह कम बात है क्या! संन्यासी इन बातों को बिल्कुल नहीं जानते। शास्त्रों में भल कुछ बातें हैं परन्तु खण्डन कर दिया है। भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। जब तक जीते रहेंगे - ज्ञान-अमृत पीते रहेंगे, सुनते रहेंगे। राजधानी स्थापन हो जायेगी। बच्चों को घड़ी-घड़ी शिक्षा दी जाती है - एक बाप को याद करो, दैवी लक्षण सीखो। कोई भी विकर्म न हो। यह तो असुरों का काम है। तुम अभी देवता बनते हो तो दैवीगुण धारण करने हैं। सबसे बड़ा है काम का कांटा। आदत पड़ी हुई है तो घड़ी-घड़ी गिर पड़ते हैं, माया चमाट मार फाँ कर देती है। तब गाया जाता है - आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती... अभी तुम एक बाप के बने हो। कहते भी हो यह सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है। तो तुम ट्रस्टी बन जाते हो। यह सब उनका है, हमको उनकी श्रीमत पर चलना है। बाप भी देखते हैं हमको सब कुछ अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कैसे चलते हैं। कोई उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पाप आत्माओं को तो नहीं देते हैं। शुरू

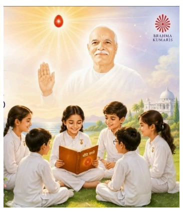

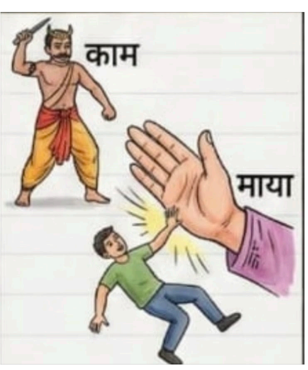

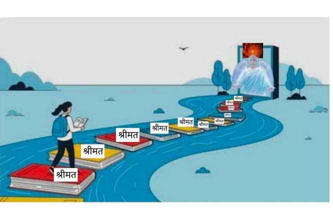

one Man Army
My Brahma Baba

में इस (ब्रह्मा) ने भी ट्रस्टी हो दिखलाया ना। सब कुछ ईश्वर अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया। बस किसको भी कुछ नहीं दिया। ईश्वर के अर्थ किया तो ईश्वर के काम में ही लगना है। शरीर निर्वाह भी तो होता था ना। जो कुछ था सब सर्विस में लगा दिया। इनको देख फिर दूसरों ने भी ऐसे किया। भट्ठी बन गई। भट्ठी नहीं बनती तो इतने बच्चे होशियार कैसे होते, सर्विस के लिए। पाकिस्तान में सीखे फिर यहाँ आकर सीखे। जब समझाने लायक बने तब बाहर निकले। अभी तो देखो कितनी प्रदर्शनियाँ आदि करते रहते हैं। बड़ों-बड़ों को निमन्त्रण देते हैं। इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ेंगे। विघ्नों से डरना नहीं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। बाप कहते हैं - योगबल में रह उन्हों को समझाओ। भगवान बाप के भी बच्चे बनकर फिर बाप को भूल जाते हो। माया के बन जाते हो। यह भी हार-जीत की कुश्ती है। परन्तु बॉक्सिंग मुआफिक है। माया घूंसा लगाती है तो फाँ हो जाते हैं। बाप कहते हैं - माया से कभी हारना नहीं है। पवित्र रहेंगे तो विश्व के

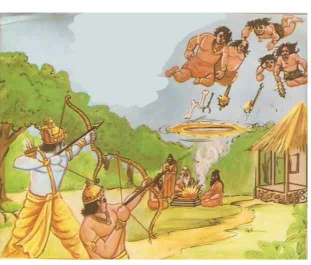

माया से बॉक्सिंग: स्मृति से जीत, विस्मृति से हार।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मालिक बनेंगे। कितनी बड़ी आमदनी है। अगर पूरा पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो जाकर दास-दासी बनेंगे। राजधानी सारी यहाँ ही स्थापन हो रही है। अच्छा!

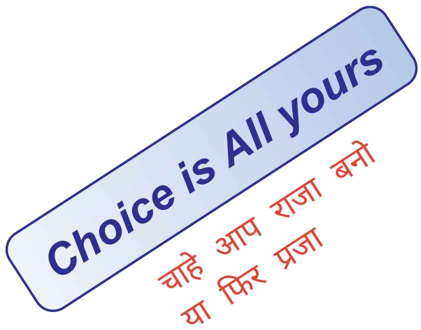

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "

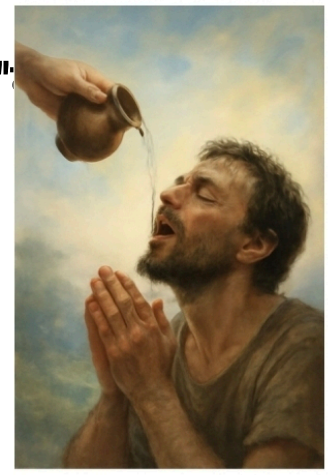

न

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) जब तक जीना है ज्ञान अमृत पीते रहना है। महावीर बन माया की बॉक्सिंग में विजयी बनना है। सबके साथ तोड़ निभाते दिल एक बाप में रखनी है।

2) विघ्नों से डरना नहीं है। सर्विस में अपना सब कुछ सफल करना है। ईश्वर अर्पण कर ट्रस्टी बन रहना है। कुछ भी उल्टे सुल्टे कार्य में नहीं लगाना है।

Instead of It, Give open challange to Maya-रावण

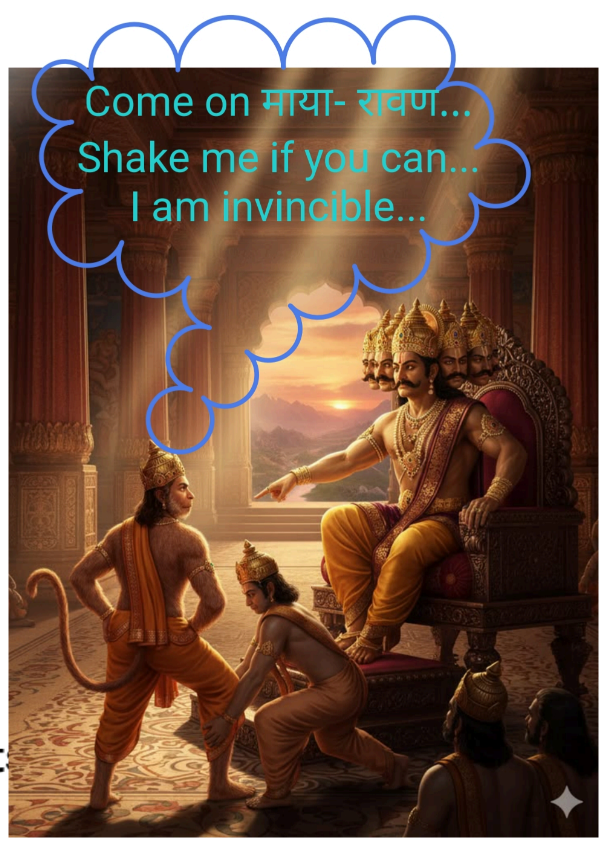

Method/Process/Instrument

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: अपने सम्पूर्ण स्वरूप के आह्वान द्वारा आवागमन के चक्र से छूटने वाले लक्की सितारे भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

माया से बॉक्सिंग: स्मृति से जीत, विस्मृति से हार।

अब अपनी सम्पूर्ण स्थिति व सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करो तो वही स्वरूप सदा स्मृति में रहेगा फिर जो कभी ऊंची स्थिति, कभी नीची स्थिति में आने-जाने का (आवागमन का) चक्र चलता है, बार -बार स्मृति और विस्मृति के चक्र में आते हो, इस चक्र से मुक्त हो जायेंगे।

वे लोग जन्म-मरण के चक्र से छूटने चाहते हैं और आप लोग व्यर्थ बातों से छूट चमकते हुए लक्की सितारे बन जाते हो।

स्लोगन:- किसी भी विघ्न के वश होना अर्थात् डायमण्ड पर दाग लगाना।

ts:

वा M.imp.

15-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

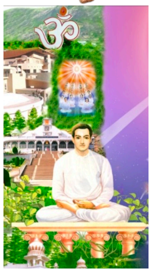

जैसे आपका आदि स्वरूप पवित्र देवता है, ऐसे यह अन्तिम जन्म भी पवित्र ब्राह्मण जीवन है, इस स्मृति के आधार पर पवित्र जीवन अति सहज अनुभव करो।

पवित्र बनो, योगी बनो - यही महामन्त्र सर्व प्राप्तियों की चाबी है।

अगर पवित्रता नहीं, योगी जीवन नहीं तो अधिकारी होते हुए भी अधिकार की अनुभूति नहीं कर सकेंगे।

यह महामन्त्र ही सर्व खजानों के अनुभूति की चाबी है।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

(आ) मुख्य सब्जेक्ट है ही 'याद' की। बाप-दादा अमृतवेले जब चक्र लगाते हैं तो थोड़ा पॉवरफुल वायब्रेशन्स की कमी दिखाई देती है। नेमीनाथ तो बन जाते हैं, लेकिन अनुभवीमूर्त बनो। नियम प्रमाण तो जबरदस्ती हो गया ना! अगर अनुभव हो गया, तो अपनी लगन में बैठेंगे। जिस बात का अनुभव होता है तो, न चाहते भी वह बात अपनी तरफ खींचती है। जैसे Example वाचा सर्विस से खुशी का अनुभव होता है तो, न चाहते भी उस तरफ दौड़ते हो ना! ऐसे ही अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ जिससे मनसा सेवा का अनुभव बढ़ा सकेंगे। लास्ट में वाचा सेवा का चान्स नहीं होगा। मनसा सेवा पर सर्टीफिकेट मिलेगा।

May I have your Attention Please..!

Method/Process/Instrument   Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है,

उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा।

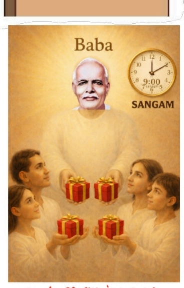

Equal opportunity For All

प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन

Here is the Difference

जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। m.m.m....imp.

जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।

Advantages

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar